एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

चनें की फसल में प्रमुख रोग एवं कीट तथा प्रबंधन

(*सत्य नारायण गुर्जर, कुलदीप हरियाणा एवं गजेन्द्र चावला)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: gurjarsatyanarayan84@gmail.com

भारत देश में चने की फसल को प्रमुख रूप से रबी के मौसम में उगाया जाता है। दलहनी फसलो के कुल उत्पादन का लगभग 60 प्रतिशत उत्पादन अकेले चने की फसल से प्राप्त होता है। चनें की हरी पत्तियों का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में सब्जी के रूप में किया जाता हे। इसकी पत्तियों में खारापन मैलिक अम्ल एवं ऑक्जेलिक अम्ल की उपस्थिति के कारण होता हे। चनें के बीजो का उपयोग दाल के रूप मे किया जाता है तथा इसके साथ–साथ इससे प्राप्त बेसन का उपयोग विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे कि नमकीन, बेसन के लडडु, बेसन चक्की इत्यादि बनाये जाते है। देश के कुल उत्पादन का लगभग 85 प्रतिशत उत्पादन मध्यप्रदेश, उतरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों में होता है।

मृदा एवं इसकी तैयारीः– चनें की फसल से अधिक पैदावार लेने के लिए उचित मृदा का चुनाव करना आवश्यक होता है। चने की फसल के लिए हल्के ढेले युक्त मिट्टी सही मानी जाती है। इसकी खेती के लिए उचित जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती हे जिसका पी.एच. मान 7–7.5 के बीच होता है। खेत की पहली गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें तथा बाद में दो जुताई देशी हल से करके पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। चने की फसल वायुमण्डलीय नाईट्रोजन का स्थिरीकरण अपनी जड़ो में करके पौधो को नाईट्रोजन उपलब्ध करवाती है।

बीज की मात्रा, बुवाई का समय एवं विधिः– चनें की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए प्रमाणित बीज का प्रयोग करना चाहिए। चने की फसल से प्रति हैक्टेयर अधिक उपज प्राप्त करने के लिए 75–80 किलो प्रति हैक्टेयर बीज काम मे लेना चाहिए। चनें के बीजो को बुवाई से पहले फफुंदनाशी, कीटनाशी, तथा अन्त में राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर लेना चाहिए। चनें के बीजो की बुवाई कतारो में करनी चहिए तथा कतार सें कतार की दुरी 30 से.मी. एवे पौधे से पौधे की दुरी 10 से.मी. रखनी चाहिए। बीज की बुवाई का उपयुक्त समय 20 अक्टुबर से शुरू होकर 10 नवम्बर तक होता है। बीज को उखटा रोग से बचाने के लिए थाइरम 2.5 ग्राम अथवा कार्बेण्डाजिम 2 ग्राम या 6 ग्राम ट्राईकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से उपचार करना चाहिए।

उपयुक्त किस्मेंः– देश मे विभिन्न कृषि विश्वविधालयो, कृषि अनुसंधान केन्द्रो, कृषि विज्ञान केन्द्रो द्वारा चनें की विभिन्न किस्मों को निकाला गया है जो अधिक उपज देने वाली होती है। इनमें से जी. एन. जी.–1581(गणगौर), विजय, जी. एन. जी.–469(सम्राट), पुसा–256, अवरोधी, आर. एस. जी.–2, दाहोद यलो, प्रताप चना–1, प्रगति, जी. एन. जी.–146, आर. एस. जी.–888(अनुभव) इत्यादि प्रमुख है।

खाद एवं उर्वरकः– चना एक दलहनी फसल होती है अतः इसे ज्यादा खाद एवं उर्वरको की आवश्यकता नही होती है। चनें की फसल की उचित बढवार एवं वृद्धि के लिए 20 किलो नाईट्रोजन, 40 किलो फॉस्फोरस एवं 25 किलो जिप्सम प्रति हैक्टेयर के हिसाब से अन्तिम जुताई के समय मृदा में मिला देना चाहिए।

सिंचाई का प्रबन्धनः– चनें की फसल में पानी की आवश्यकता अन्य फसलों की अपेक्षा कम होती है। सिंचाई की उपयुक्त व्यवस्था होने पर दो क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई करनी चाहिए। पहली सिंचाई बुवाई के 40 दिन बाद एवं दूसरी सिंचाई फली बनने के समय (60–65 दिन बाद)करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रणः– हिरणखुरी, मोथा, बथुआ, प्याजी इत्यादि खरपतवार चनें की फसल मे पाये जाते हे जो फसल की बढ़वार एवं उपज पर विपरीत प्रभाव डालते है। इन सभी खरपतवारों की रोकथाम के

लिए फसल की निराई–गुड़ाई करना आवश्यक होता है। फसल की निराई–गुड़ाई करने से खरपतवारों की रोकथाम के अलावा मृदा में वायु संचार के साथ–साथ मृदा नमी का संरक्षण भी होता है। खेत की पहली निराई–गुड़ाई बीज की बुवाई के लगभग 25–30 दिन बाद एवं दूसरी निराई–गुड़ाई 55–60 दिन पर करनी चाहिए। खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक खरपतवारनाशी का उपयोग भी किया जा सकता है। इसके तहत बुवाई से पहले आधा लीटर फ्लूक्लोरेलिन का उपयोग प्रति हैक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी मे मिलाकर छिड़काव कर देना चाहिए तथा बाद में जुताई करके अच्छी प्रकार सें मिट्टी में मिला देना चाहिए।

प्रमुख रोग एवं कीट तथा इनका नियंत्रणः– चनें की फसल में विभिन्न प्रकार के प्रमुख रोग एवं कीटो का प्रकोप होता हे जिससे फसल की उपज में भारी गिरावट होती है। इन सभी रोग एवं कीटो का प्रकोप को कम करने के लिए इनकी रोकथाम करना आवश्यक होता है।

फली छेदक कीटः– इस कीट की कैटरपिलर अवस्था सबसे हानिकारक होती है। इस कीट की लटें शुरू में चनें की पत्तियों को खाती है तथा बाद में धीरे–धीरे फलियों में छेद करके दानें को खाने लग जाती है। इस कीट की रोकथाम के लिए एन.पी.वी. 250 एल.ई. को 750 मि.ली. प्रति हैक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए तथा इसके बाद फसल की वृद्धि अवस्था पर फुल आने से पहलें एवे फली लगनें के बाद मिथाईल पैराथियान 2 प्रतिशत या फिर एण्डोसल्फॉन 4 प्रतिशत चूर्ण का 20–25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करना चाहिए।

दीमक एवं कटवर्मः– कटवर्म का प्रकोप चनें की फसल मे रात के समय अधिक होता हे। यह कीट चनें के पौधे को तने के पास जमीन के अधार से काट देता है जिससे पौधा सुखकर मर जाता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए क्युनालफॉस 1.5 प्रतिशत चुर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टेयर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिए। फसल में दीमक का प्रकोप अधिक होने पर 2 लीटर क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. का प्रयोग प्रति हैक्टेयर के हिसाब सें सिंचाई के पानी के साथ करना चाहिए।

उखटा रोगः– चनें की फसल में लगनें वाला यह प्रमुख रोग है। इस रोग के लक्षणों के अन्दर पत्तियों का पीला पड़ जाना, पौधो का सूख जाना एवं पौधे की बढ़वार कम होना आदि होते है। इस रोग के नियंत्रण के लिए फसलों में फसल–चक्र का उपयोग करके, खेत की जुताई गहरी करके, रोगरोधी किस्मों जैसे– अवरोधी, विजय, इत्यादि का उपयोग करके किया जा सकता है।

झुलसा रोगः– इस रोग के कारण चनें की उपज में कमी आती है। इस रोग के सर्वप्रथम लक्षण पौधे की पत्तियों, फलियों, तनों आदि पर छोटे–छोटे गोल भुरे रंग के घब्बों के रूप में दिखाई देते है। रोग के नियंत्रण के लिए मेन्कोंजेब 0.2 प्रतिशत या घुलनशील गन्घक 0.2 प्रतिशत धोल का छिड़काव करके किया जा सकता है।

उपजः– चनें की फसल में कृषि की उन्नत विधियों का समावेश करके उपज को बढ़ाया जा सकता है। चनें में उन्नत कृषि विधियां अपनाकर लगभग 25–30 क्विंटल दाना उपज के रूप में प्राप्त किया जाता है।